मैथिलीशरण गुप्त

★ **भूमिका** :- मैथिलीशरण गुप्त हिन्दी साहित्य ऐसे सशक्त और समर्थ साहित्यकार है जिन्होंने अपनी कलम के माध्यम से अतीत और वर्तमान का सुन्दर सांमजस्य किया है। विषयों की विभिन्नता तथा संख्या की दृष्टि से इन्होंने अमूल्य काव्य - कृतियां प्रदान की श्री प्रेमनाथ जायसवाल के शब्दों में :- 'जिस प्रकार मुंशी प्रेमचन्द ने अपने कथा-साहित्य द्वारा हिन्दी के मस्तक को उन्नत और गौरवशाली किया है, ठीक उसी प्रकार गुप्त जी ने भी हिन्दी भाषा के कवियों का प्रति-निधित्व किया है। दोनों अपने- अपने क्षेत्र में श्रेष्ठ है।

2. **जन्म एवं माता पिता** :- गुप्त जी का जन्म 3 अगस्त 1886ई को ब्रिटिश भारत में झांसी (उत्तर प्रदेश) के निकट चिरगांव नामक स्थान पर एक प्रतिष्ठित वैष्णव परिवार में हुआ। इनके पिता का नाम सेठ रामचरण था। जो स्वयं एक बहुत अच्छे कवि थे। जो 'कनकलता' उपनाम से काव्य रचना करते थे। इनकी माता का नाम काशीबाई था जो उदार एवं सात्विक स्वभाव की थी।

Topic   Date

★ **बचपन** :- मैथिलीशरण गुप्त जी का जन्म एक अधिक रूप से सम्पन्न परिवार में हुआ था। क्योंकि इनके पिता चिरगाँव नगर के बहुत सम्पन्न व्यक्ति थे। वे नगर के प्रसिद्ध व्यापारी थे। साथ ही तेरह गाँवों की उनकी जमींदारी भी थी। मुख्य: घर में सभी भौतिक सुख सुविधाएं होने से सुखमयी व्यतीत हुआ।

★ **शिक्षा** :- गुप्त जी की प्राथमिक शिक्षा चिरगाँव में ही प्राप्त की आप के पिता डिप्टी कलेक्टर बनाना चाहते थे इसलिए अंग्रेजी शिक्षा प्राप्ति लिए झाँसी के मिडिल - मैकडोनल्ड हाई स्कूल में भेजा गया। किन्तु वहां मन न लगने के कारण आप शीघ्र ही घर वापिस लौट आए। तब घर पर ही आपको भाषाओं का अध्ययन एवं अनु-शीलन मुंशी अजमेरी की देखरेख में करवाया गया।

★ **साहित्य प्रेरणा** :- साहित्य के प्रति अटूट लगन उनकी बचपन से ही थी। बचपन में ही अपने भाई सियाराम गुप्त जी से वह काव्य में ही बात करते थे। उनके पिता स्वंय काव्य प्रेमी होने के साथ - साथ एक अच्छे कवि भी थे। (कविवर मुं) बाल्यकाल में कविवर मुंशी अजमेरी जी की संगति में उन्होंने

Topic _____ Date _____

अध्ययन ही नहीं किया बल्कि कविता करना भी सीखा। तत्पश्चात महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की प्रेरणा प्राप्त कर उनके आदर्शों पर काव्य रचनाएँ की।

* आप ने स्वंय यह बात स्वीकार की है कि :-

"मुझ में महावीर का प्रसाद मिलने से ही साहित्य साधना की प्रेरणा आई।"

कवि में द्विवेदी जी के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए लिखा है :-

"कवते तुलसीदास भी कैसे मानस-नाद।
महावीर का यदि उन्हें मिलता नहीं प्रसाद।।"

आपकी प्रारंभिक रचनाएं कलकत्ता से प्रकाशित होने वाले 'वैश्योपकारक' में छपी परन्तु आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के सम्पर्क में आने पश्चात आपकी काव्य प्रतिभा में अभूतपूर्व विकास हुआ। उनकी प्रेरणा से आदर्शोन्मुख पर बढ़ती हुई आपकी कविताएं 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित होने लगी।

* राजनीतिक क्षेत्र में सहभागिता :- सन 1921 ई. में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के सम्पर्क में आने से आप का राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश का श्रीगणेश होता है। 16 अप्रेल 1941 ई को व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लेने के कारण आपको गिरफ्तार कर लिया गया। पहले आपको झांसी और फिर आगरा जेल में

Topic Date

ले जाया गया। किन्तु आरोप सिद्ध न होने कारण आप को 7 मी महीने पश्चात छोड़दिया गया। सन 1952 से 1964 ई. तक आप राज्यसभा के सदस्य मनोनीत हुए।

* पुरस्कार एवं सम्मान :- भारतीय संस्कृति महानायक मैथिलीशरण गुप्त जी के राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत समन्वय-वादी आदर्शमूलक और भारतीयता से अनुप्राणित और भारतीय से अनुप्राणित साहित्य को अनेक सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त हुए। हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा 1936 में आपकी प्रसिद्ध महाकाव्य 'साकेत' पर 'मंगलाप्रसाद पारितोषिक', 1946 ई. में आप को साहित्य वाचस्पति की उपाधि, 1948 ई. आगरा विश्वविद्यालय ने आपको डी. लिट. की मानद उपाधि से विभूषित किया। साहित्य जगत में 'दद्दा' के नाम से प्रसिद्ध मैथिलीशरण गुप्त को गांधी जी ने राष्ट्रकवि की उपाधि प्रदान की 1955 ई. आपका पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। राजनीतिक क्षेत्र में आप की सहभागिता एवं योगदान से तत्कालीन राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद ने सन 1962 ई. अभिनन्दन ग्रंथ भेंट किया।

* निधन :- सन् 1963 ई. में अनुज (छोटे भाई) रियारामशरण गुप्त के निधन ने अपूरणीय आघात पहुचाया 12 दिसंबर 1964 ई. हृदय का दौरा पड़ा और साहित्य का जगमगाता तारा सदा के लिए अस्त हो गया।

Topic Date

★ रचनाएँ :- राष्ट्र-प्रेम, राष्ट्रोत्थान, राष्ट्र-चेतना तथा नए भारत के निर्माण की उत्तर अभिलाषा की कल्पना को लेकर गुप्त जी ने एक से बढ़कर एक उत्कृष्ट काव्य रचनाओं से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया। गुप्त जी ने लगभग 40 मौलिक काव्यों की रचना की। आप की महत्वपूर्ण रचनाएं इस प्रकार है :-

★ काव्य :-

1. रंग में भंग - (1909 ई.)
2. जयद्रथ वध - (1910 ई.)
3. भारत-भारती - (1912 ई.)
4. पंचवटी - (1925 ई.)
5. साकेत - (1931)
6. यशोधरा - (1932)
7. द्वापर - (1936)
8. जय भारत - (1952)
9. विष्णुप्रिया - (1957)

★ नाटक :-

1. तिलोत्तमा
2. चन्द्रहास
3. अनघ

★ अनुवाद :- स्वप्नवासवदत्ता, मेघनाथवध, प्लासी का युद्ध, रूबाइयत, उमर खैयाम।

Topic _____ Date _____

* **काव्यगत विशेषताएँ** :- गुप्त जी हिन्दी काव्य धारा के प्रतिनिधि कवि है। उनकी रचनाओं में मानव जीवन का संदेश है, अतीत का गौरव - गान है तथा आदर्श पुरुषों का चरित्र - चित्रण है। संक्षेप में कवी काव्य की विशेषताएं इस प्रकार है :-

राष्ट्रीयता तथा गांधीवादी :- मैथिलीशरण गुप्त के जीवन में राष्ट्रीयता के भाव कूट - कूट कर भरे गए थे। गुप्त जी के काव्य में राष्ट्रीयता और गांधीवाद की प्रधानता है। भारत-भारती में देश की वर्तमान दुर्दशा पर क्षोभ प्रकट करते हुए कवि ने देश के अतीत का अत्यंत गौरव और श्रद्धा के साथ गुणगान किया। भारत श्रेष्ठ था, है और सदैव रहेगा का भाव इन पंक्तियों में गुंजायमान है :-

"भूलोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला स्थल कहाँ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल कहाँ?

गौरवमय अतीत के इतिहास और भारतीय संस्कृति की महत्ता :- एक समुन्नत, सुगठित और सशक्त राष्ट्रीय नैतिकता से युक्त आदर्श समाज, मर्यादित एवं स्नेहसिक्त परिवार और उदात्त चरित्र वाले नर - नारी के निर्माण की दिशा में उन्होंने प्राचीन आख्यानों को अपने काव्य का चर्म्य वर्ण्य विषय बनाकर उनके सभी पात्रों को एक नया औभप्राय दिया है। जयद्रथवध, साकेत, पंचवटी, सैरन्ध्री, बक संहार, यशोधरा, द्वापर, नहुष, जयभारत, हिडिम्बा, विष्णुप्रिया एवं रत्नावली आदि रचनाएं इसके उदाहरण है।

Topic_______________ Date_______

* **दार्शनिकता** :- दर्शन की जिज्ञासा आध्यात्मिक चिन्तन से अभिन्न होकर भी भिन्न है। मननशील आर्यसुधियों की यह एक विशिष्ट चिन्तन प्रक्रिया है और उनके तर्कपूर्ण सिद्धान्त ही दर्शन है। गुप्त जी का दर्शन उनके कलाकार के व्यक्तित्व पक्ष का परिणाम न होकर सामाजिक पक्ष का अभिव्यक्तिकरण है। कर्मशीलता उनके दर्शन की केन्द्रस्थ भावना है। साकेत में भी वे राम के द्वारा कहलाते है :-

सन्देश यहाँ मैं नहीं स्वर्ग का लाया।
इस भुतल को ही स्वर्ग बनाने आया। १२।

* **रहस्यात्मकता एवं आध्यात्मिकता** :- गुप्त जी के परिवार में वैष्णव भक्ति भाव प्रबल था। प्रतिदिन पूजा-पाठ, भजन, गीता पढ़ना आदि सब होता था। यही कारण है कि गुप्त जी के जीवन में भी यह आध्यात्मिक संस्कार बीज के रूप में पड़े हुए थे जो धीरे-धीरे अंकुरित होकर रामभक्ति के रूप में वटवृक्ष हो गया।

राम, तुम मानव हो? ईश्वर नहीं हो क्या?
विश्व में रमे हुए नहीं सभी कहीं हो क्या?

* **नारी मात्र की महत्ता का प्रतिपादन** :- नारियो की दुरवस्था तथा दु:खियों दीनों और असहायों की पीड़ा ने उनके हृदय में करुणा के भाव भर दिये थे। यही कारण है कि उनके अनेक काव्य ग्रंथों में नारियों की पुनर्प्रतिष्ठा एवं पीड़ित के प्रति सहानुभूति झलकती है। नारियो की ~~प्रति~~ ~~मह~~ दशा

Topic Date

को बल करती उनकी ये पंक्ति पंक्तियाँ पाठकों के हृदय में करुणा उत्पन्न करती है :-

अबलाजीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी॥

* प्रकृति वर्णन :- मुंशी गुप्त जी द्वारा रचित खण्डकाव्य पंचवटी में सहज वन्य-जीवन के प्रति गहरा अनुराग और प्रकृति के मनोहारी चित्र हैं। उनकी निम्न पंक्तियाँ आज भी कविता प्रेमियों के मानस पटल पर मजीर हैं :-

चारुचंद्र की चंचल किरणें, खेल रहीं हैं जल थल में,
स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई है अवनि और अम्बरतल में।

* भाषा-शैली :- मैथिलीशरण गुप्त की काव्य भाषा खड़ीबोली है। इस पर उनका पूर्ण अधिकार है। उनकी प्रारम्भिक रचनाओं की भाषा तत्सम है। संस्कृत के शब्दभण्डार से ही उन्होंने अपनी भाषा का भण्डार भरा है, लेकिन 'प्रियप्रवास' की भाषा में संस्कृत बहुआ नहीं होने पायी। इसमें प्राकृत रूप सर्वथा उभरा हुआ है। उनका काव्य भाव तथा कला पक्ष दोनों की दृष्टि से सफल है।

शैलियों के निर्वाचन में मैथिलीशरण गुप्त ने विविधता दिखाई, किन्तु प्रधानता प्रबन्धात्मक इतिवृत्तमय शैली की है। उनके अधिकांश काव्य इसी शैली में है। 'रंग में भंग', 'जयद्रथ वध', 'नहुष', 'सिद्धराज', 'त्रिपथक', 'साकेत' आदि प्रबंध शैली में हैं। यह शैली दो प्रकार की है- 'खंड काव्यात्मक' तथा 'महाकाव्यात्मक'। साकेत महाकाव्य है तथा शेष सभी काव्य खंड काव्य के अंतर्गत आते हैं।

Topic Date

★ निष्कर्ष :- हिन्दी साहित्य को गति देने में तथा राष्ट्रीयता का प्रचार करने में ~~स~~ गुप्त जी सफल हुए है डॉ. शांतिप्रिया द्विवेदी का मत : किसी पर्वत माला में सुमेरु के उपवन में प्रथम पुष्प का और गगन में प्रथम नक्षत्र का जो स्थान है वही - वर्तमान कालीन कविता में गुप्त जी का है।